B.A. III (Hon's) Paper - V

Q: धार्मिक सहिष्णुता और धर्मनिरपेक्षवाद में, यदि कोई संबंध हो, तो उसकी व्याख्या कीजिए।

Ans: - जब विभिन्न धर्मों अथवा एक ही धर्म के अलग-अलग संप्रदायों के अनुयाई परस्पर मिल कर शांति पूर्वक रहते हैं और एक दूसरे के धार्मिक सिद्धांतों, विचारों, विश्वासों तथा अनुष्ठानों के महत्व को स्वीकार करते हुए पारस्परिक विरोध या शत्रुता की भावना नहीं रखते तो उनकी इस उदारतापूर्ण मनोवृत्ति को धार्मिक सहिष्णुता की संज्ञा दी जा सकती है।

स्पष्टतः धार्मिक सहिष्णुता रखने वाले व्यक्ति एक दूसरे के धर्म का अनुमोदन तथा आदर न करते हुए भी परस्पर मिल कर शांति पूर्वक जीवन ~~व्यतीत~~ व्यतीत कर सकते हैं। यह ठीक है कि वे एक-दूसरे के धार्मिक विश्वासों, विचारों और कर्मकांड का समर्थन नहीं करेंगे, किन्तु इसके साथ ही वे इस धार्मिक मतभेद के कारण वे एक दूसरे को कष्ट या हानि भी नहीं पहुँचायेंगे। उन सभी व्यक्तियों से ऐसे ही आचरण की आशा की जाती है जो धार्मिक सहिष्णुता रखते हैं अथवा इसका दावा करते हैं। यह विचारधारा गाँधी ~~जी~~ ~~के~~ 'सर्व-धर्म-सम-भाव' की विचारधारा की प्रथम सोपान है

धर्मनिरपेक्षवाद में 'धर्म' शब्द का प्रयोग इसके सामान्य प्रचलित अर्थ में किया जाता है जिसके अनुसार हम हिन्दू धर्म, इसाई धर्म, जैन, बौद्ध, इस्लाम

Scanned with CamScanner

आदि को धर्म कहते हैं। यहाँ 'धर्म' शब्द का अर्थ 'अभ्युदय', 'धारयते इति धर्मः' अथवा 'स्व कर्तव्य-पालन' नहीं है जिसे प्राचीन भारतीय मनीषियों ने स्वीकार किया है। इसका तात्पर्य यह है कि धर्मनिरपेक्षवाद अभ्युदय अथवा स्वकर्तव्यपालन के अर्थ में धर्म का निषेध नहीं करता। यह सिद्धांत धर्म शब्द के उस अर्थ में इसका निषेध करता है जिस अर्थ में धर्म के लिए 'मजहब' तथा 'रिलिजन' शब्दों का प्रयोग किया जाता है। धर्मनिरपेक्षवाद के समर्थकों के अनुसार इस सामान्य प्रचलित अर्थ में धर्म का परित्याग करना अथवा कम से कम उसके प्रति तटस्थ या उदासीन रहना ही श्रेयस्कर है। इसका कारण यह है कि उक्त सामान्य अर्थ में धर्म अनिवार्यतः किसी अलौकिक या अतिप्राकृतिक सत्ता अथवा सत्ता और शक्ति पर ही आधारित रहता है जिसे स्वीकार करने के फलस्वरूप मानव प्रायः इस जगत और अपने वर्तमान जीवन के प्रति उदासीन हो जाता है। वह अपने समस्याओं का समाधान स्वयं प्रयास के द्वारा खोजने के स्थान पर इनके समाधान के लिए किसी अलौकिक शक्ति या सत्ता पर आश्रित रहने लगता है। जीवन तथा जगत के प्रति धर्मपरायण मनुष्य के इस परलोकोन्मुखी दृष्टिकोण को धर्मनिरपेक्षवाद के समर्थक उसके लिए अत्यधिक हानिकारक मानते हैं और इसी कारण वे इसे

Scanned with CamScanner

प्रवृत्ति प्रतिबिम्बित करती है। मूलतः मानवतावाद का समर्थन करते हुए वे यह कहते हैं कि इस संसार में मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ स्थान है और उसके जीवन के परे किसी अन्य जीवन का कोई सम्भावना नहीं है। अतः उसके इसी जीवन को स्वयं अपने प्रयत्न द्वारा सुखमय तथा सार्थक बनाना उसका अनिवार्य कर्तव्य है।

स्पष्टतः धार्मिक सहिष्णुता और धर्मनिरपेक्षता दोनों 'धर्मों' के प्रचलित विचारधारा में आस्था रखती है। धार्मिक सहिष्णुता एवं धर्मनिरपेक्षता दोनों का दृष्टिकोण "मानवतावादी" है। लौकिक जगत की समस्याओं का समाधान स्वयं मानव द्वारा करना चाहती हैं न कि किसी दैवीय सत्ता का आश्रय लेना। धर्मनिरपेक्षतावाद 'धर्म' को द्वारा। दोनों का केन्द्र मानव है। मानव, समाज, देश के विकास के लिए अनिवार्य मानते हैं।

धार्मिक सहिष्णुता दोनों विचारधाराओं में कई धर्मों या एक ही धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों में समानता व्यक्त किया गया है। साथ ही दोनों विचारधाराओं का आधारभूमि के लिए विभिन्न धर्मों का होना आवश्यक है।

धार्मिक सहिष्णुता में आस्था रखने वाला व्यक्ति एक दूसरे के धर्म का अनुमोदन तथा आदर न करते हुए भी परस्पर मिलकर शांति पूर्वक जीवन व्यतीत कर सकता है अर्थात यह नकारात्मक अवधारणा का पोषक है, जबकि धर्मनिरपेक्षवाद के नकारात्मक एवं सकारात्मक

Scanned with CamScanner

दोनों पक्ष हैं। नकारात्मक पक्ष में अतार्किक कट्टर अंधविश्वास, जैसा - डायनप्रथा, छुआछूत इत्यादि है, धर्म का कोई हस्तक्षेप नहीं, बल्कि अनुकूल है धर्म पर समकालीन दृष्टि लेना होना चाहिए। नकारात्मक पक्ष में मनुष्य के व्यवहार अंध का निराकरण अनुभव एवं तर्कबुद्धि द्वारा किया जाना चाहिए।

धार्मिक सहिष्णुता में धर्म के आधारभूत तत्वों से विचार किया गया है, जबकि धर्मनिरपेक्षता वाद में 'धर्म' के पुरोहित प्रावधानों को मनुष्य के चहुँमुखी विकास में बाधक माना गया है।

अतः धार्मिक सहिष्णुता एवं धार्मिक सहनता में ~~समानता~~ स्थितियों की समानता एवं असमानता देखा गया है। समानता जहाँ मानव के धार्मिक उत्थान एवं वंचित वर्गों का समाधान कर उसके चहुँमुखी विकास की आकांक्षित सोच है तो असमानता दोनों के मौलिक अवधारणा में देखने को मिलता है। जब महात्मा गांधी के 'सर्वधर्म-समभाव' की विचारधारा का यह प्रथम शर्त बना तो इसका भारत का पहला संरचना का केन्द्र बिन्दु।